वर्ष-7, अंक 25, जुलाई-सितम्बर 2020

तमसो मा ज्योतिर्गमय

ISSN 2347-6605

वाक् सुधा

VAAK SUDHA

MULTI DISCIPLINE RESEARCH JOURNAL

AN INTERNATIONAL REFEREED QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

A SCHOLARLY PEER REVIEWED JOURNAL

www.vaaksudha.com

वर्ष : 7 • अंक : 25 • जुलाई-सितम्बर 2020 • ISSN 2347-6605

वाक् सुधा

VAAK SUDHA

(अन्तर्राष्ट्रीय त्रैमासिक शोध पत्रिका)

(International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research)

(A Scholarly Peer Reviewed Journal)

विशेष सूचना :

विचार की प्रतिबद्धता में राष्ट्रहित सर्वोपरि है।

संरक्षक :

प्रो. दलवीर सिंह चौहान

पूर्व अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया

रूपेश कुमार चौहान

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक

द्वारा 47, ब्लॉक ए-3, गली नं. 5, धर्मपुरा एक्सटेंशन, दिल्ली-43 से प्रकाशित एवं डॉल्फिन प्रिंटोग्राफिक्स, 4ई/7, पाबला बिल्डिंग, झंडेवालान् एक्सटेंशन, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

दूरभाष संख्या-09555222747, 9267944100, 9555666907

Email: vaaksudha@gmail.com • Website : www.vaaksudha.com

Year - 5 Issue - 18 वसुधैव कुटुम्बकम् October 2020 ISSN 2456-0898

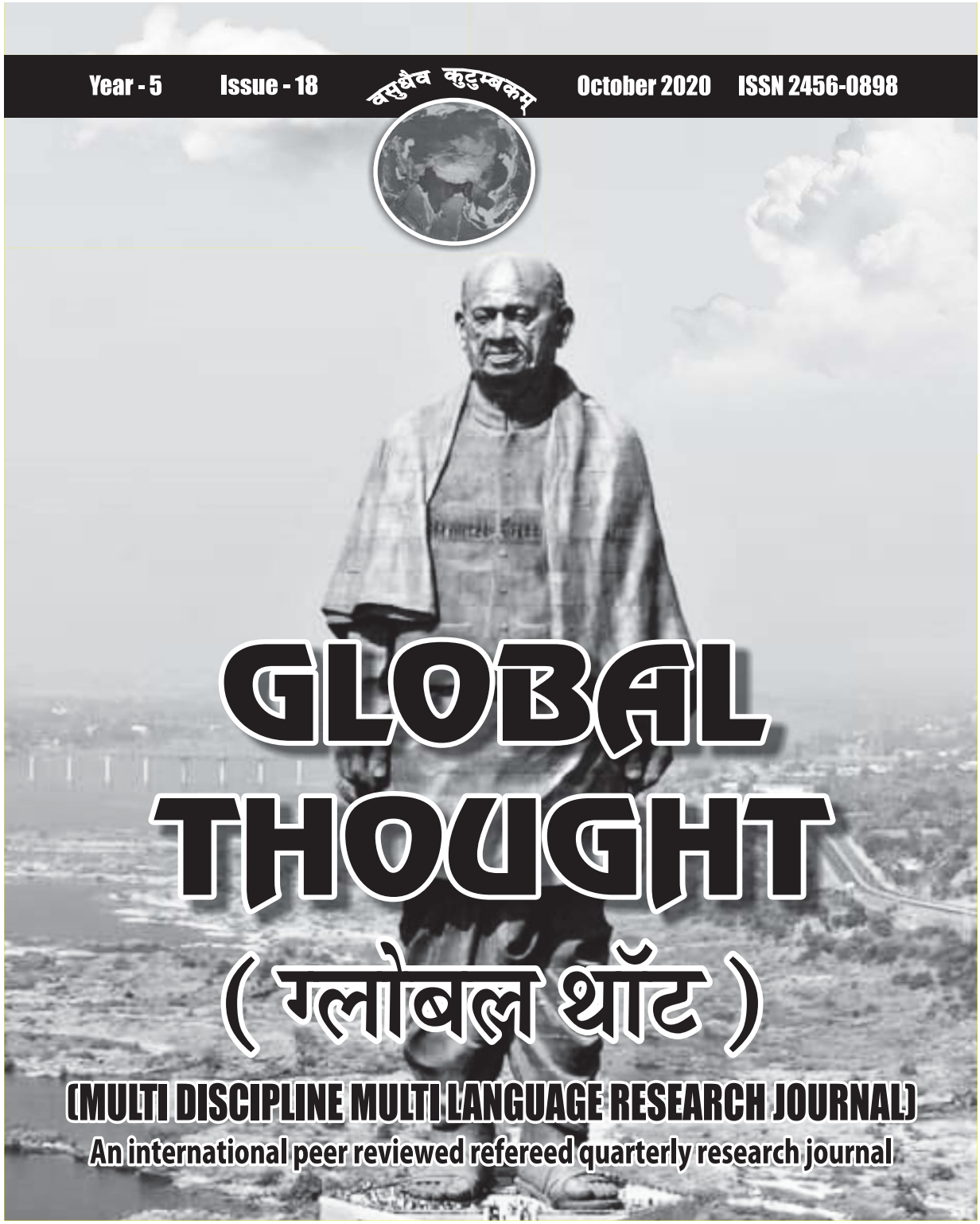

GLOBAL THOUGHT

(ग्लोबल थॉट)

(MULTI DISCIPLINE MULTI LANGUAGE RESEARCH JOURNAL)

An international peer reviewed refereed quarterly research journal

सम्पादक : डॉ रुपेश कुमार चौहान

दूरभाष : 9555222747

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय 9

वैदिक आख्यान एक दार्शनिक पक्ष 10
डा. साक्षी

मीडिया का बदलता स्वरूप 14
डॉ. राम किशोर यादव

सूरकाव्य में स्त्री 17
रिंकु कुमारी

मुक्तिबोध की जनपक्षधरता 20
डॉ. शोभा कौर

स्वातंत्र्योत्तर भारत का विकास अनुभव 23
डॉ. मंजु कुमारी सिन्हा

भारत के विकास में बाधक सामाजिक तथ्य 28
धर्मवीर प्रसाद

आधुनिक बिहार के निर्माता–*डॉ० सच्चिदानन्द सिन्हा* **: व्यक्तित्व एवं कृतित्व** 32
रीता कुमारी

संस्कृत में वैश्विक संदर्भ
(कतिपय शास्त्रादि ग्रन्थों के आलोक में) 35
डॉ. ललन कुमार पाण्डेय

सतत् विकास की अवधारणा : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 43
डॉ. चन्द्रमणि प्रसाद

भारत में राष्ट्रवाद के अध्ययन की पद्धतियां 47
डॉ. तुंगनाथ मौआर

मौर्योत्तर समाज - परिवर्तन एवं समन्वय 53
डॉ. प्रशांत कुमार

स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास में साम्प्रदायिकता और राजनीति 57
डॉ. नवीन कुमार

समय की धार में धँस कर खड़ा कवि : केदारनाथ अग्रवाल 60
डॉ. राकेश शर्मा

हिन्दी कविता में राष्ट्रीय चेतना 75
विनीता कुमारी

गोपाल सिंह नेपाली और जानकीवल्लभ शास्त्री के गीतों में शास्त्रीयता 77
डॉ गुरू चरण सिंह

भारत में सांप्रदायिकता का पुनरुत्थान एवं विकास : दूसरे विश्व युद्ध तक एक दृष्टि 81
संजीव कुमार

भाषा के बहुविध आयाम: एक शिक्षाशास्त्रीय विमर्श 84
सच्चिदानंद सिंह

रंगकर्म और कोरोना 90
भानु प्रताप सिंह

अम्बेडकर : नारी उत्थान के सूत्रधार 92
राजन कुमार शर्मा

नई कहानी आन्दोलन : एक पर्यवेक्षण 96
डॉ. पंकजेन्द्र किशोर

भारतीय दर्शन के प्रारब्ध (भाग्य) के संदर्भ में कर्म-सिद्धान्त 101
डॉ कौशलेन्द्र कुमार

पटना बाढ़ : समस्या, कारण एवं समाधान 103
शाहिद अख्तर

रेणु के रिपोर्ताज : भाषा और शिल्पगत वैविध्य 108
डॉ. सावन कुमार

हिंदी में ऐतिहासिक उपन्यासों की परंपरा 112
डॉ. मेनका कुमारी

धूमिल की कविताओं में राजनीतिक-चेतना एवं प्रतिरोध 116
अनुज कुमार

वायु प्रदूषण : कारण, दुष्प्रभाव एवं समाधान दिल्ली के विशेष संदर्भ में 120
आबिद अख्तर

नये राज्यों का निर्माण एवं संघीय चुनौतियाँ 129
डॉ. प्रदीप कुमार माँझी

भारतीय विदेश नीति के निर्धारक तत्व एवं नवीन प्रवृत्तियां 132
डॉ. बालेश्वर माँझी

छायावादी काव्यधारा में अभिव्यक्त नारी-भावना 136
डॉ. प्रभा नन्दा

'राम-रहीम' में नारी संबंधी विविध समस्याएँ 139
डॉ. अश्विनी कुमार

रजनी तिलक के काव्य में दलित जीवन और सरोकार 142
डॉ. चैनसिंह मीना
शिवानी के निबंधों में आम जन-जीवन 150
इन्द्र भूषण
शैलीमापक्रमिकी विश्लेषण : शिवपूजन सहाय कृत 'कहानी' 'कहानी का प्लॉट' के संदर्भ में 153
डॉ. समदर्शी कुमार
रायका (रैबारी) जाति के व्यावसायिक एवं राजनैतिक प्रतिमानों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (राजस्थान के विशेष संदर्भ में) 156
डॉ. भूरसिंह जाटव
बुद्ध धम्म का दर्शन 165
शंभू कुमार
अलका सरावगी के उपन्यासों में चित्रित स्त्री जीवन 168
डॉ. कंचन कुमारी
मंदिर प्रवेश आन्दोलन में गांधी और अम्बेडकर की भूमिका-एक अध्ययन 172
गायत्री सिन्हा
भारतीय सामंतवाद और इतिहास लेखन की परंपरा 177
अभिषेक प्रियदर्शी
भारतीय दर्शन में पदार्थ 187
डॉ. राजेश कुमार
गया नगर : भौगोलिक आकारिकी एवं ऐतिहासिक स्थिति 193
डॉ. राजू रंजन प्रसाद
पाणिनि अष्टाध्यायी में हेतुमत् णिच् 200
डॉ. भूपेन्द्र कुमार
अद्वैत वेदान्ती भारतीतीर्थ का व्यक्तित्व एवं कृतित्व 205
निर्मला
कालिदास का पर्यावरण चिन्तन 210
डॉ. अमोघ रंजन पाठक
पर्यावरणीय इतिहास और अंत:विषयात्मकता ... 214
राकेश कुमार
चीनी विस्तारवाद की चुनौती 218
प्रो. रसाल सिंह
सन्तुलित भोजन-गीता का ज्ञान 223
स्वयंप्रभा
महामारी का समाज और साहित्य पर प्रभाव : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में 227
प्रकाश
पूर्णिया जिला में कृषि आधारित उद्योग के विकास की संभावना 231
मितु कुमारी
श्रीमद्भगवद्गीता में योग का स्वरूप 234
डॉ. राधा कान्त तिवारी
रामायण का आदिकाव्यत्व 239
डॉ. आशुतोषकुमारमिश्र:
गांधी के धर्म संबंधी विचार 241
डॉ. श्वेता सत्यम्
भारत में रेडियो प्रसारण-आरम्भ से आकाशवाणी तक : एक दृष्टि 243
नेहा कक्कड़
मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श 246
मिनाक्षी
शेखावाटी क्षेत्र में पर्यटन विकास : संभावनाएँ व चुनौतियाँ 249
डॉ. सीताराम
आंचलिकता की अवधारणा एवं आंचलिक उपन्यास 254
संजीत कुमार
सिद्धान्तकौमुद्या: आदिमङ्गलांचरण समीक्षणम् ... 258
राकेश रौशन चौधरी
मौर्यकालीन युवराजों की राजनीतिक व्यवस्था : एक विवेचन 260
संजीव रंजन
मनुस्मृति में वर्णित वर्ण-व्यवस्था 264
ममता कुमारी
डॉ. श्यौराज सिंह 'बेचैन' की कविताओं में दलित चेतना 268
डॉ. सुनीता कुमारी
ग्लोबल गाँव का देवता उपन्यास में जनजातीय एवं पर्यावरणीय चेतना 271
राहुल कुमार
प्रतिरोध की परम्परा और विद्रोही की कविताएँ .. 275
दिनेश यादव
छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत के काव्य में प्रकृति-चित्रण 279
रवि भूषण कुमार
आयुर्वेद में धातुनिर्माण प्रक्रिया 282
डॉ. अजित कुमार

शोध-पत्र

मुक्तिबोध की जनपक्षधरता

डॉ. शोभा कौर

मुक्तिबोध को समझना अपने समय की समझ को पुख्ता करना है। विशेष रूप से तब जब जीवन स्थितियां और भी जटिल और दूर होती जा रही हैं। नितांत विषम परिस्थितियों में मुक्तिबोध निरंतर सामाजिक प्रतिबद्धता के साथ अपने कवि कर्म का निर्वाह करते रहे। गहरे सामाजिक सरोकारों की काव्य अभिव्यक्ति को सफल बनाने के लिए जिस काव्य पद्धति को उन्होंने चुना निर्माण किया उसकी दुरूहता को लेकर उनकी जीवन दृष्टि और काव्य दृष्टि के बारे में काफी विवादास्पद स्थिति पैदा होती रही। उन्हें विश्लेषित करने के क्रम में उन्हें अस्तित्ववादी, रहसयवादी, भाववादी, यथार्थवादी आदि परस्पर विरोधी मान्यताओं से युक्त अंतर्विरोधों का कवि भी सिद्ध किया गया। किंतु बाद में यह भी निर्विवाद रूप से साबित हुआ कि मुक्तिबोध एक प्रतिबंध और अपने समय से जूझते जागरूक कवि हैं। उनके कवि कर्म को समझने के लिए उनके जीवन दर्शन को समझना अनिवार्य है क्योंकि मुक्तिबोध 'एक आलोचक कवि' हैं। नई कविता का आत्मसंघर्ष में वह इस बात पर बल देते हैं कि "किसी न किसी रूप में हमारे पास व्यापक जीवन दर्शन आवश्यक है इसमें अगर कुछ भी न हो तब भी वे बुनियादी बातें तो हों जिन्हें साधारण जन अपने हृदय में अनुभव करते हैं जैसे अन्याय का प्रतिकार, मानव सभ्यता की स्थापना के प्रयत्न, विकृत स्वार्थवाद और भ्रष्टाचार का विरोध, समझौतापरस्ती के खिलाफ लड़ाई और साधारण भारतीय जनमत के प्रति भक्ति और अनुराग की बातें (क्या ये बातें किसी व्यापक जीवन दर्शन में नहीं आ सकती। क्या जीवन दर्शन के लिए हमें पश्चिमी सूक्ष्मताओं की पच्चीकारियों तक जाना होगा)[1]

मुक्तिबोध का आत्मसंघर्ष बहुआयामी है-एक तरफ अभावग्रस्त जिंदगी का मोर्चा है, दूसरी तरफ सामाजिक राजनैतिक स्थितियों में मध्यवर्ग की सुविधापरस्ती उन्हें परेशान करती है, तीसरी तरफ नई कविता के अधिकांश कवियों द्वारा दुःख निराशा, हताशा, संत्रास आदि मनोभावों को शाश्वत और अपरिहार्य मानकर कला की पूर्ण स्वायत्तता और सौन्दर्यानुभूति और जीवनानुभूति की विलगत उन्हें निरंतर कोंचती है। यह सब कारण संयुक्त रूप से उन्हें जीवन के विविध आयामी 'अंधेरे में' से रू-ब-रू कराते हैं और वे सर्वाधिक उपयुक्त अभिव्यक्ति के सारे खतरे उठाने के लिए छटपटाते हैं। उनके इस आत्मसंघर्ष को रघुवीर सहाय के शब्दों में यूँ व्यक्त किया जा सकता है "आज के संकट ने हमें इंसान की जिंदगी और कुत्ते की मौत के बीच चांप लिया है इस स्थित में सबसे आसान यह हो सकता है कि मैं सिर्फ जीवन के आज के लिए फिक्र करूँ और व्यक्ति के लिए जितनी स्वतंत्रता बची है उतने से संतोष करूँ। इससे कुछ कम सुगम है कि मैं यह रियासत से अस्वीकार करूं और उनके आसरे जिंदा रहूं जो साहित्य के हथियारों से मेरी स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ते हैं। दोनों से कठिन और एक ही सही रास्ता है कि कल के लिए मैं सब सेनाओं में लड़ूँ- किसी में ढाल सहित, किसी में निष्कवच, मगर मरने अपने को सिर्फ अपने मोर्चे पर दूँ-अपने भाषा के शिल्प और उस अकेली मगर दोतरफा जिम्मेदारी के मोर्चे पर जिसे साहित्य कहते हैं।"[2] इस लंबे उद्धरण को यहां प्रस्तुत करने की आवश्यकता बस इतनी

Peer Reviewed Refereed Journal • ISSN : 2347-6605